भजन

तर्ज –अखियों के झरोंखों से

पिया ऐसे जहां में तुम क्यूं आप उतर आये
अपनी रूहों को भी क्यूं साथ मे ले आये

1–इस झूठ की दुनिया में पिया,सब झूठे नजारे हैं
जीयें तो भला कैसे जीयें, हम तेरे सहारे हैं
ऐसी माया दिखलायी, कुछ होश नही आयी
मन मेरा घबराए, पिया साथ क्यूं ले आए
पिया ऐसे

2–अपना निजघर छूटा, वो खिलवत भी छूट गई
कैसी थी निसबत धाम की, हाय वो भी छूट गई
यह माया छल वाली, दिन रात छला करती
कब लौट के हम जायें पिया साथ क्यूं ले आए
पिया ऐसे

3–इक पल न जुदा रहते, जिनके बिना धाम में
हाय वो ही हमें भाते नही, इस माया के काम में
कुछ मेहर करो प्रीतम, हम प्यारे बन जायें
वापिस घर जा कर के, मुंह कौन सा दिखलायें
पिया ऐसे